

AKHLAQE MUSTAFA (HINDI)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

# अख़्लाक़े मुस्तफ़ा

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में होने वाला  
सुन्नतों भरा बयान



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ  
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

## दुरूद शरीफ की फज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैजे गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है :  
إِنَّ اللّٰهَ وَكُلَّ یَقْرِئُ مَلَکًا **عَزَّوَجَلَّ** ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है । **أَعْطَاهُ أَسْمَاءَ الْخَلَائِقِ** जिसे तमाम मख़्लूक की आवाज़ें सुनने की ताक़त अता फ़रमाई है ।

فَلَا یُصَلِّیْ عَلٰی أَحَدٍ اِلَّا یَوْمَ الْقِیَامَةِ اِلَّا اَبْلَغَنِیْ بِاِسْمِهِ وَاِسْمِ اَبِیْهِ هَذَا فَلَانُ بْنُ فُلَانٍ قَدْ صَلَّی عَلَیْكَ  
पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है । कहता है : फुलां बिन फुलां ने आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर दुरूदे पाक पढ़ा है ।”

(مجمع الزوائد، کتاب الادعية، باب فی الصلاة علی النبی-----الح، ۱۰/ ۲۰۱، حدیث: ۹۱۱۷۲)

है करम ही करम कि सुनते हैं आप खुश हो के बार बार दुरूद  
जाते वाला पे बार बार दुरूद बार बार और बे शुमार दुरूद

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**  
**फ़िरिश्ते की कुव्वते समाअत**

**سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तवर है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता है । यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर **صَلَّی عَلَیْهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** पर हाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा कुव्वते समाअत दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसलमानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है और उसे इल्मे ग़ैब भी अता किया गया है कि वोह दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम बल्कि उन के वालिद साहिबान तक के नाम जान लेता है । जब ख़ादिमे दरबारे रिसालत की

कुव्वते समाअत और इल्मे ग़ैब का येह हाल है तो मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे परवर दगार ﷺ के इख़्तियारात व इल्मे ग़ैब की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने गुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रयाद सुन कर بِإِذْنِ اللَّهِ تَعَالَى (या'नी **अल्लाह** के हुक्म से) इमदाद फ़रमाएंगे !

**फ़रयाद उम्मीती जो करे हालाे ज़ार में  
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो**

(हदाइके बख़्शिश, स. 130)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हुसूले सवाब की खातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं कि फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : **يُثَبِّتُ الْمَوْمِنَ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ** मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है ।  
(المعجم الكبير للطبرانی ج ۲ ص ۸۵ / حدیث ۵۹۴)

**दो मदनी फूल :**

(1) बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

**बयान सुनने की निय्यतें**

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा  
 ✨ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की खातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ✨ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ✨ धक्का वगैरा लगा तो सब्र करूंगा । घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ✨ **صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ، تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ، اذْكُرُوا اللَّهَ** वगैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ✨ बयान के बा'द खुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा ।

## बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ❀ **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ❀ देख कर बयान करूंगा ❀ पारह **14**, सूरतुन्नहूल, आयत **125** :

**اُدْمُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالنَّعْظَةِ الْحَسَنَةِ** (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से) और बुख़ारी शरीफ़ की हदीस **4361** में वारिद इस फ़रमाने मुस्तफ़ा **(صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ)** : **يَا نَبِيَّ اَنْتَ بَلَّغُوا عَنِّي وَلَوْ اِتَتْ** : “पहुंचा दो मेरी तरफ़ से अगरचें एक ही आयत हो” में दिये हुवे अहकाम की पैरवी करूंगा ❀ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ करूंगा ❀ अशअर पढ़ते नीज़ अरबी, अंग्रेजी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा ❀ मदनी काफ़िले, मदनी इन्आमात, नीज़ अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वगैरा की रग़बत दिलाऊंगा ❀ कहकहा लगाने और लगवाने से बचूंगा ❀ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर हत्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा ।

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ**

## बयान के मदनी फूल

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज के बयान का मौजूअ है “**اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ**” इस बयान में सब से पहले एक ग़ैर मुस्लिम कैदी के साथ दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** के हुस्ने अख़्लाक का वाकिआ आप के गोश गुज़ार करूंगा और फिर आप के सामने प्यारे आका **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** की सीरते मुबारका के वसीअ व अरीज़ गुलशन से अख़्लाके करीमा के चन्द मदनी फूल पेश करने की सआदत हासिल करूंगा ताकि हम सब अपने गुलशने हयात को इन फूलों से मुअत्तर

रखें। इस के इलावा येह भी बयान करूंगा कि अख़्लाक़ किसे कहते हैं और अख़्लाक़े हसना से क्या मुराद है? इस बयान में हम येह भी सुनेंगे कि मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के साथ सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना ﷺ का रविय्या कैसा होता था? अलावा अर्जी प्यारे आक़ा ﷺ के अख़्लाक़ के हवाले से आयात व अहादीस और चन्द वाकिआत बयान करूंगा और फिर आख़िर में इमामा शरीफ़ की सुन्नतें और आदाब बयान किये जाएंगे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ  
कैदी के साथ हुस्ने अख़्लाक़

दूसरी सिने हिजरी में रसूले करीम, रऊफ़ुरहीम ﷺ ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मस्लमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की कियादत में एक लश्कर नज्द की जानिब रवाना फ़रमाया। जिस ने बनी हनीफ़ा के सरदार सुमामा बिन उसाल को गिरिफ़्तार किया और बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। आप ﷺ ने सुमामा को मस्जिद के एक सुतून से बान्धने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। हुक्म की ता'मील हो जाने के बा'द आप ﷺ उस के पास तशरीफ़ लाए और दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ सुमामा ! तुम्हारा क्या हाल है ? और तुम अपने बारे में क्या गुमान रखते हो ? सुमामा ने जवाब दिया कि ऐ मुहम्मद ! (ﷺ) मेरा हाल और ख़याल तो अच्छा ही है। अगर आप मुझे क़त्ल करेंगे तो एक ख़ूनी आदमी को क़त्ल करेंगे और अगर मुझे आज़ादी के इन्आम से नवाज़ें तो एक शुक्र गुज़ार के लिये इन्आम होगा और अगर आप ﷺ माल का इरादा रखते हैं तो जितना चाहें बता दीजिये। प्यारे आक़ा ﷺ येह गुफ़्तगू कर के चले आए। फिर दूसरे रोज़ भी येही सुवाल व जवाब हुवा और तीसरे रोज़ भी इसी तरह सुवाल फ़रमाया। फिर आप ﷺ ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि सुमामा को आज़ाद कर दो। चुनान्वे

सुमामा को आज़ाद कर दिया गया। इस वाकिए से पहले सुमामा ने हुजूर पुरनूर اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े हसना के बारे में सुना तो बहुत कुछ था, लेकिन जब ब जाते खुद आप اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ का मुशाहदा किया तो बेहद मुतअस्सिर हुवे और मस्जिदे नबवी اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बाहर निकल कर क़रीब ही एक खजूर के बाग़ में चले गए, वहां गुस्ल कर के पाक व साफ़ होने के बा'द दोबारा मस्जिदे नबवी اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आए और कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गए। (بخاری ج ۲ ص ۲۷۷ باب وفد بنی حنیفہ و حدیث شمامہ و مسلم ج ۲ ص ۹۳ باب ربط الاسیر و مدارج ج ۲ ص ۱۸۹)

**गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया**

**छूटे न इलाही अब संगे दरे जानां**

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** कैसा प्यारा अख़्लाक़ था हमारे मक्की मदनी

सरकार, शहनशाहे वाला तबार اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कि एक कैदी के पास खुद जा कर उस का हाल अहवाल दरयाफ़्त फ़रमाया। बहर हाल आप اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कामिलुल अख़्लाक़ थे, छोटा हो या बड़ा, जवान हो या बुढ़ा गुलाम हो या आका, कैदी हो या आज़ाद, औरत हो या मर्द, हर एक के साथ हमारे प्यारे प्यारे आका اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाकी बरताव इतना उम्दा हुवा करता था कि लोग, मुतअस्सिर हो कर आप اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ें किया करते थे, आप اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर अजनबी अपनाइय्यत महसूस करते, कुफ़ार इस्लाम क़बूल कर लेते और जान के दुश्मन, जान की हिफ़ाज़त करने वाले बन जाया करते थे। रहमते दारैन, सरवरे कौनैन اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के येह करीमाना अख़्लाक़ हर एक मुसलमान को अपनाने चाहियें, लेकिन बद किस्मती से हमारा येह हाल है कि अन्जान लोगों से हुस्ने सुलूक से पेश आना तो दूर की बात ! अपने पड़ोसियों बल्कि वालिदैन्, भाई बहनों या बीवी बच्चों के साथ भी ऐसा ना रवा सुलूक करते हैं कि **اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظُ**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते तय्यिबा से हमें येह दर्स मिलता है कि हमारा रविय्या हर किसी के साथ, बिल खुसूस पड़ोसियों, रिश्तेदारों और घर वालों के साथ बेहतर होना चाहिये, जब भी किसी के साथ कोई मुआमला हो तो हमारी कोशिश येही हो कि उस के साथ हुस्ने अख़्लाक से पेश आएँ क्योंकि हुस्ने अख़्लाक बहुत ही ख़ूब सूरत और उम्दा सिफ़त है, इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि जिस शख़्स के अख़्लाक जिस क़दर उम्दा और अच्छे होंगे हदीसे मुबारका में उसे उतना ही बेहतरीन शख़्स कहा गया है। चुनान्वे,

### बेहतरीन शख़्स

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक ऐसी मजलिस में बैठा हुवा था जिस में हज़रते सय्यिदुना समुरह और हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ) भी शरीक थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “बेशक बद अख़्लाकी और बद कलामी इस्लाम में से नहीं और बेशक लोगों में इस्लाम के ए'तिबार से सब से अच्छा वोह है जो उन में ज़ियादा अच्छे अख़्लाक वाला है।” (المستند للإمام احمد بن حنبل، رقم ۲۰۸۷، ج ۷، ص ۴۱۰)

### बेहतरीन व बद तरीन अख़्लाक

इसी तरह एक और रिवायत में बेहतरीन अख़्लाक वाले को बरोजे क़ियामत कुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुश ख़बरी भी सुनाई गई है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा खुशानी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि “बेशक तुम में से मुझे सब से ज़ियादा महबूब और आख़िरत में मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक वाला होगा और तुम में से मुझे सब से ज़ियादा नापसन्द और आख़िरत में



मुझ से ज़ियादा दूर वोह शख्स होगा जो तुम में बद तरीन अख़्लाक़ वाला होगा ।”  
(المسند للإمام احمد بن حنبل، رقم 1747، ج 1، ص 220)

**صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अभी हम ने हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत सुनी, जिस से यकीनन हमारा बद अख़्लाक़ी की बुरी आदत को छोड़ने और हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने का ज़ेहन भी बना होगा, लेकिन सुवाल येह पैदा होता है कि हुस्ने अख़्लाक़ या बद अख़्लाक़ी कहते किसे हैं ? इन की पहचान क्या है ? क्योंकि जब तक इन की पहचान नहीं होगी, उस वक़्त तक हुस्ने अख़्लाक़ को अपनाने या बद अख़्लाक़ी से बचने में मदद नहीं मिलेगी । तो आइये इन की ता'रीफ़ात सुनते हैं । चुनान्चे,

**हुस्ने अख़्लाक़ और बद अख़्लाक़ी की ता'रीफ़**

अख़्लाक़ “ख़ुलुक़” की जम्अ है और ख़ुलुक़ की वज़ाहत में मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1286** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब इहयाउल उलूम सफ़हा **165** पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : ख़ुलुक़ (आदत) नफ़्स में रासिख़ एक ऐसी कैफ़ियत का नाम है जिस की वजह से आ'माल ब आसानी सादिर होते हैं । (इन्हें अमली जामा पहनाने में किसी) ग़ौरो फ़िक़ की हाज़त नहीं होती । अगर नफ़्स में मौजूद कैफ़ियत ऐसी हो कि इस के बाइस अच्छे अफ़आल इस तरह अदा हों कि वोह अक्ली और शरई तौर पर पसन्दीदा हों तो इसे हुस्ने अख़्लाक़ कहते हैं और अगर इस से बुरे अफ़आल इस तरह अदा हों कि वोह अक्ली और शरई तौर पर नापसन्दीदा हों तो उसे बद अख़्लाक़ी समझा जाएगा । (احياء العلوم، جلد 3، صفحه 165، مطبوعه مكتبة المدينه)

इस ता'रीफ़ से येह मा'लूम हुवा कि जो शख्स कभी कभार किसी आरिज़ी हाज़त या वक़्ती जोश व जज़्बे की वजह से कोई अच्छा अमल करे मसलन माल खर्च करे या गुस्सा आने पर काबू



कर ले तो येह मुआमलात भी अगर्चे काबिले ता'रीफ हैं लेकिन हकीकी सखावत और हकीकी बुर्दबारी उसी वक्त नसीब होगी, जब येह चीजें तबीअत में दाखिल हो जाएंगी। **اَعْلَاهُ** हमें भी अपनी रिजा के लिये राहे खुदा में माल खर्च करने और गुस्से को काबू में रखते हुवे अफ़वो दर गुज़र से काम लेने की तौफीक नसीब फ़रमाए।

### हुस्ने अख़्लाक क्या है ?

एक शख्स ने हुस्ने अख़्लाक के पैकर, महबूबे रब्बे अकबर **اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** से हुस्ने अख़्लाक के मुतअल्लिक सुवाल किया तो आप **اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

حُذِّ الْعَفْوَ وَأْمُرًا بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ (پ 9، الاعراف: 199)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :** ऐ महबूब मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

फिर इरशाद फ़रमाया : हुस्ने खुलुक येह है कि तुम क़तए तअल्लुक करने वाले से सिलए रेहूमी (अच्छ सुलूक) करो, जो तुम्हें महरूम करे उसे अता करो और जो तुम पर जुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो। (احياء العلوم، ج 3، ص 61)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** फ़रमाते हैं कि “ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने, ख़ूब भलाई करने और किसी को तक्लीफ़न देने का नाम हुस्ने अख़्लाक है।” (سنن الترمذی، ج 3، ص 404، الحديث 2012)

**हो अख़्लाक अच्छ हो किरदार सुथरा**

**मुझो मुत्तकी तू बना या इलाही**

(वसाइले बख़्शिश, स. 104)

**سَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ**

**अख़्लाक नबुव्वत कु़रआन की रोशनी में**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَعْلَاهُ** ने इन्सानों

समेत तमाम मख़लूक में अफ़ज़ल व आ'ला और अहसन व अकमल जिस ज़ात को बनाया वोह ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत

ﷺ की ज़ाते बा बरकत है जिन के अन गिनत अवसाफ़े हमीदा और बे शुमार व बे मिस्ल कमालाते जलीला में से एक वस्फ़े मुबारक “खुल्के अज़ीम” भी है। प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा ﷺ के दीगर तमाम अवसाफ़ व कमालात की तरह हुस्ने अख़्लाक में भी आप ﷺ का कोई सानी नहीं बल्कि आप ﷺ की ज़ाते गिरामी अख़्लाके हसना और अच्छे आ’माल की तकमील के लिये दुन्या में मबऊस फ़रमाई गई चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّ اللّٰهَ يَعْثُقُ بِتَمَامِ مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ وَكَمَالِ مَحَاسِنِ الْاَفْعَالِ** “या’नी बेशक **अब्लाह** ने मुझे हुस्ने अख़्लाक और अच्छे आ’माल को तमाम व कमाल तक पहुंचाने के लिये मबऊस फ़रमाया है।”

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب مکارم الاخلاق والعلو عن ظلم، ج ۸، رقم ۱۳۶۸۳، ص ۳۲۳)

मा’लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ की तशरीफ़ आवरी का एक मक्सद येह भी है कि लोगों के अख़्लाक व मुआमलात को दुरुस्त करें। उन के अन्दर से बुरे अख़्लाक की जड़ें उखाड़ें और इन की जगह बेहतरीन अख़्लाक पैदा करें। चुनान्वे, आप ﷺ ने अपने कौल व अमल से तमाम अच्छे अख़्लाक की फ़ेहरिस्त मुरतब फ़रमाई और ज़िन्दगी के तमाम शो’बों पर इसे नाफ़िज़ किया और हर तरह के हालात में इन पर कारबन्द रहने की हिदायत की।

आज से तक़रीबन चौदह सो बरस पहले जब हर तरफ़ बद अमली और बद अख़्लाकी का दौर दौरा था, इन्सान एक दूसरे के दुश्मन थे, अरब के क़बाइल बरस हा बरस से एक दूसरे के साथ जंगो जिदाल में मसरूफ़ थे गोया दुन्या में अमन और महबूत का वुजूद मिट चुका था ऐसे में मुअल्लिमे आ’ज़म, हादिये अलम **ﷺ** लोगों में अपने अख़्लाके करीमाना से अमन और

सलामती का पैग़ाम आम फ़रमा रहे थे । **अब्बाह** तबारक व तआला ने कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद में पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 159 में ए'लान फ़रमाया :

فِيمَا رَحِمَهُ مِنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَافِلًا لَفَقَطْنَا الْقُلُوبَ لَا نَفْطُؤُا مِنْ حَوْلِكَ ۚ (پ ۴، ال عمران: ۱۵۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो कैसी कुछ **अब्बाह** की मेहरबानी है कि ऐ महबूब तुम इन के लिये नर्म दिल हुवे और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते ।

दुश्मनाने रसूल ने कुरआन की ज़बान से येह खुदाई ए'लान सुना मगर किसी की मजाल न हुई कि इस के ख़िलाफ़ कोई बयान देता या आफ़ताब से ज़ियादा रोशन इस हकीक़त को झुटलाता बल्कि आप ﷺ के बड़े से बड़े दुश्मन ने भी येह ए'तिराफ़ किया कि आप ﷺ बहुत ही बुलन्द अख़लाक़, नर्म ख़ू और रहीमो करीम हैं ।

### ख़ालिके काइनात का फ़रमान

आप ﷺ अख़लाक़ियात का ऐसा हसीन पैकर थे कि खुद ख़ालिके काइनात **عَزَّوَجَلَّ** ने येह फ़रमा दिया :

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝ (پ २९९، القلم: ३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम्हारी खू बू बड़ी शान की है ।

तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा

तेरी ख़िल्क़ को हक़ ने जमील किया

कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा !

तेरे ख़ालिके हुस्नो अदा की क़सम

(हदाइके बख़्शिश, स. 62)

बहर हाल हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम ﷺ महासिने अख़लाक़ के तमाम गोशों के जामेअ थे । या'नी हिल्म व अफ़व, रहूमो करम, अदलो इन्साफ़, जूदो सख़ा, ईसार व कुरबानी, मेहमान नवाज़ी, शुजाअत, ईफ़ाए अहद, हुस्ने मुआमला, सब्रो क़नाअत,

नर्म गुफ्तारी, खुश रूई, मिलनसारी, मुसावात, ग़मख़्तारी, सादगी व बे तकल्लुफ़ी, तवाज़ोअ व इन्किसारी और हयादारी के इतने बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ हैं जिस तक किसी और की रसाई मुमकिन नहीं कि उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** ने एक जुम्ले में इस की सहीह तस्वीर खींचते हुवे इरशाद फ़रमाया कि “كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ” या’नी ता’लीमाते कुरआन पर पूरा पूरा अमल येही आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** के अख़्लाक़ थे ।

(दلائل النبوة للبيهقي، باب ذكر أخباره رويته في شمائله... إلخ، ج ١، ص ٣٠٩)

**तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी  
हैरां हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे !**

(हदाइके बख़्शिश, स. 175)

**صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अभी हम ने सुना कि हुस्ने अख़्लाक़ एक वसीअ सिफ़त है जिस के ज़िम्न में बहुत सारी खूबियां आ जाती हैं और येह तमाम खूबियां सरकारे अक्दस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** की ज़ाते मुबारका में मौजूद थीं चूंकी आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** की हयाते तय्यिबा हमारे लिये बेहतरीन नुमूना है इस लिये हमें आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** की ज़ात में मौजूद इन अच्छे अख़्लाक़ को अपना ने की कोशिश करनी चाहिये । मगर अफ़सोस ! अगर आज हम अपना मुहासबा करें और ग़ौर करें तो शायद इन खूबियों का नामो निशान हमारे अन्दर दूर दूर तक नज़र नहीं आएगा । नज़र आए भी कैसे ? क्यूंकि दुन्या के धन्दों और दीगर काम काज के लिये तो हमारे पास वक़्त है लेकिन प्यारे आका **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** की प्यारी प्यारी सुन्नतें सीखने के लिये वक़्त नहीं, नमाज़ के लिये वक़्त नहीं, कुरआन की तिलावत के लिये वक़्त नहीं, कुरआन के मअानी और मफ़ाहीम समझ कर अमल करने के लिये वक़्त नहीं, नेक इजतिमाआत में शिर्कत के लिये वक़्त नहीं, राहे खुदा का मुसाफ़िर बनने के लिये वक़्त नहीं ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हिम्मत कीजिये, ग़फ़लत की इस चादर को उतार कर अपनी ज़िन्दगी को सुन्नतों के सांचे में ढालने का अज़्म कर लीजिये। आइये दा'वते इस्लामी के मुश्क़बार मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की बरकत से हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने और बुरी आदत को तर्क करने का ज़ेहन मिलेगा। नीज़ नेक इजतिमाआत में शिर्कत और मदनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल की सोहबत से अच्छे अख़्लाक़ आहिस्ता आहिस्ता हमारे किरदार का हिस्सा बन जाएंगे। **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हमें अख़्लाक़े हसना को अपनाने और दा'वते इस्लामी के माहोल से हर दम वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد**  
**अख़्लाक़े मुस्तफ़ा के चन्द गोशे**

नबियों के सालार, दो जहां के ताजदार **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** के निखरे निखरे अख़्लाक़ के भी क्या कहने कि इन्ही महकते फूलों की खुशबू से सारा आलम महका, कुफ़्रो शिर्क के बादल छटे, दिलों के मैल दूर हुवे, जुल्मो जफ़ा की कमर टूटी और सिसकती इन्सानियत को चैन नसीब हुवा। आइये ! ताजदारे काइनात **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ** के हुस्ने अख़्लाक़ के चन्द रोशन और मुनव्वर गोशों के मुतअल्लिक़ मज़ीद सुनते हैं ताकि इन की चमक दमक, नूरानियत और आबो ताब से हम बदकारों के अख़्लाक़ भी संवर जाएं, दिल रोशन हो जाएं और हमारा ज़ाहिरो बातिन निखर जाए। तो आइये सब से पहले सरदारो दो जहां, सरवरे कौनो मकां **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ** के हिल्म और अफ़व से मुतअल्लिक़ सुनते हैं। चुनान्वे,

**हिल्म व अफ़व**

हज़रते ज़ैद बिन सा'ना **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** जो इस्लाम लाने से पहले एक यहूदी आलिम थे उन्होंने ने हुज़ूर **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّمَ** से कुछ खजूरें खरीदीं। खजूरें देने की मुद्दत में अभी एक दो दिन बाकी थे

कि उन्होंने ने भरे मजमअ में हुज़ूर ﷺ से इन्तिहाई तल्ख़ व तुर्श लहजे में सख़्ती के साथ तकाज़ा किया और आप ﷺ का दामन और चादर पकड़ कर निहायत तुन्द व तेज़ नज़रों से आप की तरफ़ देखा और चिल्ला चिल्ला कर कहा : ऐ मुहम्मद (ﷺ) ! तुम सब अब्दुल मुत्तलिब की अवलाद का येही तरीका है कि तुम लोग हमेशा लोगों के हुकूक अदा करने में देर लगाया करते हो और टाल मटोल करना तुम लोगों की आदत बन चुकी है। येह मन्ज़र देख कर हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने निहायत ग़ज़ब नाक और तेज़ नज़रों से घूर कर फ़रमाया : “ऐ **اَبُو اَحْمَد** के दुश्मन ! तू खुदा के रसूल से ऐसी गुस्ताखी कर रहा है ? खुदा की क़सम ! अगर हुज़ूर ﷺ का अदब मानेअ न होता तो मैं अभी अपनी तल्वार से तेरा सर उड़ा देता।” येह सुन कर आप ﷺ ने फ़रमाया : ऐ उमर ! (रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें तो येह चाहिये था कि मुझे को अदाए हक़ की तरगीब दे कर और उस को नर्मी के साथ तकाज़ा करने की हिदायत कर के हम दोनों की मदद करते। फिर आप ﷺ ने हुक्म दिया कि ऐ उमर ! (रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) इस को इस के हक़ के बराबर खजूरें दे दो और कुछ ज़ियादा भी दे दो। हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जब हक़ से ज़ियादा खजूरें दीं तो हज़रते ज़ैद बिन सा'ना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा कि ऐ उमर ! मेरे हक़ से ज़ियादा क्यूं दे रहे हो ? आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : चूंकि मैं ने टेढ़ी तिरछी नज़रों से देख कर तुम्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया था, इस लिये हुज़ूर ﷺ ने तुम्हारी दिलजुई व दिलदारी के लिये तुम्हारे हक़ से कुछ ज़ियादा देने का मुझे हुक्म दिया है। येह सुन कर हज़रते ज़ैद बिन सा'ना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा कि ऐ उमर ! क्या तुम मुझे पहचानते हो ? मैं ज़ैद बिन सा'ना हूं। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि तुम वोही ज़ैद बिन सा'ना हो जो यहूदियों का बहुत बड़ा

आलिम है ! उन्होंने ने कहा जी हां । येह सुन कर हज़रते उमर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : फिर तुम ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के साथ ऐसी गुस्ताख़ी क्यूं की ? हज़रते ज़ैद बिन सा'ना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जवाब दिया कि ऐ उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! दर अस्ल बात येह है कि मैं ने “तौरात” में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की जितनी निशानियां पढ़ी थीं, उन सब को मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की ज़ात में देख लिया, मगर दो निशानियों के बारे में मुझे इन का इमतिहान करना बाक़ी रह गया था । एक इन का हिल्म जहल पर ग़ालिब रहेगा और दूसरा जिस क़दर ज़ियादा इन के साथ जहल का बरताव किया जाएगा, उसी क़दर इन का हिल्म बढ़ता जाएगा । चुनान्चे, मैं ने इस तरकीब से इन दोनों निशानियों को भी इन में देख लिया और मैं शहादत देता हूं कि यकीनन येह नबिय्ये बरहक़ हैं और ऐ उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मैं बहुत ही मालदार आदमी हूं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपना आधा माल, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर सदका किया । फिर हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सा'ना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और कलिमा पढ़ कर इस्लाम में दाख़िल हो गए ।

(दालिल النبوة ج ۱ ص ۲۳ و زرقانی ج ۴ ص ۲۵۳)

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कैसा प्यारा अख़्लाक़ है, हमारे मीठे मीठे आका صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का कि कोई कितने ही सख़्त लहजे में बात क्यूं न करे, मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم उसी क़दर सब्रो हिल्म से काम लेते, इसी वजह से वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमाना को देख कर इस्लाम क़बूल कर लिया करता !!!

सो बार तेरा देख के अफ़व और तरहूम  
फ़रयाद है ! ऐ किश्तिये उम्मत के निगेहबां !  
ऐ चश्मए रहमत وَ اَمِّ  
जिस क़ौम ने घर और वतन तुझ से छुड़ाया  
बर्ताव तेरे जब कि येह आ'दा से हैं अपने

हर बागी व सरकश का सर आखिर को झुका है  
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है  
दुन्या पे तेरा लुत्फ़ सदा आ़म रहा है  
जब तू ने किया नेक सुलूक उन से किया है  
आ'दा से गुलामों को कुछ उम्मीद सिवा है



कर हक़ से दुआ उम्मेत मर्हूम के हक़ में ख़तरों में बहुत इस का जहाज़ आ के घिरा है  
उम्मत में तेरी नेक भी हैं बंद भी हैं लेकिन दिलदादा तेरा एक से एक इन में सिवा है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**कमाले ज़ब्त क्व मुजाहश**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** याद रखिये कि हुस्ने अख़्लाक की ने'मत सिर्फ़ सआदत मन्दों का हिस्सा है और येह **अब्बाह** तआला का ख़ासुल ख़ास इन्आम है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार क़ादिरि रज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** को भी **अब्बाह** तआला ने अख़्लाके हसना की दौलत से मालामाल किया है, आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** की आदत है कि छोटे बड़े सभी से निहायत ख़न्दा पेशानी और पुर तपाक तरीक़े से मिलते हैं और ऐसे मवाक़ेअ, जहां अकसर लोग गुस्से से बे क़ाबू हो जाते हैं वहां आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** मुस्कुराते रहते हैं, चुनान्वे,

जब दा'वते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़, **“गुलज़ारे हबीब मस्जिद”** गुलिस्ताने शफ़ीअ औकाड़वी (सोलजर बाज़ार) बाबुल मदीना कराची में होता था। क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** इजतिमाअ में शिर्कत के लिये इस्लामी भाइयों के साथ जब सीनेमा घर के करीब से गुज़रे तो एक नौजवान जो फ़िल्म का टिकट लेने की गरज़ से क़ितार में खड़ा था, उस ने **(مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ)** बुलन्द आवाज़ से अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** को मुखातब कर के कहा : **“मौलाना ! बड़ी अच्छी फ़िल्म लगी है, आ कर देख लो !”** इस से पहले कि आप के हमराह इस्लामी भाई, जज़्बात में आ कर कुछ करते, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** ने बुलन्द आवाज़ से सलाम किया और करीब पहुंच कर बड़ी ही नर्मी के साथ इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **बेटा !** मैं फ़िल्में नहीं देखता, अलबत्ता आप ने मुझे दा'वत पेश की तो मैं ने सोचा कि आप को भी दा'वत

پेश کرے, अभी **اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ** गुलज़ारे हबीब मस्जिद में सुन्नतों भरा इजतिमाअ होगा, आप से शिर्कत की दरखास्त है, अगर आप अभी नहीं आ सकते तो फिर कभी जरूर तशरीफ लाइयेगा। फिर आप **دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَہ** ने उसे एक इत्र की शीशी तोहफे में पेश की।

चन्द सालों बा'द, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَہ** की बारगाह में सुन्नतों के आमिल एक इस्लामी भाई, सब्ज़ इमामा सजाए हाज़िर हुवे और कुछ इस तरह से अर्ज की : हुजूर ! चन्द साल कब्ल एक नौजवान ने आप को **(مَعَاذَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ)** फ़िल्म देखने की दा'वत दी थी और आप ने कमाले ज़ब्त का मुज़ाहरा करते हुवे नाराज़ होने के बजाए इजतिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की थी, **वोह नौजवान मैं ही हूँ !!!** मैं आप के अज़ीम हुस्ने अख़्लाक से बेहद मुतअस्सिर हुवा और एक दिन इजतिमाअ में आ गया, फिर आप की नज़रे करम हो गई और **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ** मैं गुनाहों से तौबा कर के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया। (तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत. स. 40)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَہ** ने अपनी ज़ात के लिये इन्तिक़ाम नहीं लिया बल्कि सब्र किया और इतनी सख़्त बात कहने वाले के साथ भी हुस्ने अख़्लाक से पेश आए, आप के हुस्ने अख़्लाक की बरकत से वोह शख़्स गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेकियों के रास्ते पर गामज़न हो गया। हमें भी चाहिये कि ऐसे मौक़ओं पर गुस्से से बिफर जाने और इन्तिक़ाम लेने के बजाए हुस्ने अख़्लाक का मुज़ाहरा करें, **اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ** इस के फ़वाइद व समरात जीते जी इस दुन्या में ही नज़र आ जाएंगे। नेकी की दा'वत देने वालों और बुराई से मन्अ करने वालों के लिये तो खुश अख़्लाक होना बहुत जरूरी है, क्यूंकि जो मुबल्लिग़ जितना ज़ियादा खुश अख़्लाक, सलाम में पहल करने वाला, पुर तपाक अन्दाज़ से मुसाफ़हा या मुआनका करने वाला, ख़न्दा पेशानी से मुस्कुरा कर मिलने वाला, अपनी ज़ात के लिये गुस्सा न करने वाला,

जो इस पर जुल्म करे उसे मुआफ़ करने वाला, एहतिरामे मुस्लिम का खूगर और मुसलमानों की ग़मख़्तारी करने वाला होगा तो लोग उतनी ही आसानी से उस की तरफ़ माइल होंगे और उसे इनफ़िरादी कोशिश करने में दिक्कत का सामना भी नहीं करना पड़ेगा । **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**

**صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ**  
**रहमो करम**

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर **صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلِّمْ** के बे मिसाल हुस्ने अख़्लाक़ का एक गोशा “रहमो करम” भी है, जो अन्वारो तजल्लियात और बरकात व सआदात का एक ऐसा समन्दर है, जिस का किनारा नज़र नहीं आता । कोई अपना हो या पराया, क़रीब हो या दूर, दोस्त हो या दुश्मन, जो भी हाज़िरे ख़िदमत हुवा तो रहमो करम के साहिले समन्दर की ठन्डी और खुशगवार हवाओं से लुत्फ़ अन्दोज़ ज़रूर हुवा, किसी का सीना ईमान की दौलत से ठन्डा हुवा तो किसी के सीने में नफ़रतों और कदूरतों की जलने वाली आग बुझ गई, किसी की बे क़रारी मिट गई तो किसी की परेशानी और मोहताजी दूर हो गई जब कि हाज़िर न होने वालों ने जब इन तस्कीन बख़्श और महकती फ़िज़ाओं के बारे में सुना तो दामने करम से लिपटने के लिये बे चैन हो गए, इन के दिल मचल गए और वोह बारगाहे रिसालत से फ़ैज़ पाने और रहमों करम की ठन्डी और खुशगवार हवाओं से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये दरबारे रिसालत में हाज़िर होना शुरूअ कर दिया । आइये, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلِّمْ** के रहमो करम का एक बहुत ही प्यारा वाकिआ सुनते हैं, चुनान्चे,

**जाओ तुम सब आजाद हो**

मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **862** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **सीरते मुस्तफ़ा** के सफ़हा **437** पर है कि सि. **8** हि. में जब मक्का फ़तह हुवा तो ताजदारे दो आलम **صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلِّمْ** ने शहनशाहे

इस्लाम की हैसियत से हरमे इलाही में सब से पहला दरबारे आ़म मुन्अकिद फ़रमाया, जिस में अफ़्वाजे इस्लाम के इलावा हज़ारों कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के ख़्वास व अ़वाम का एक ज़बरदस्त इज़्दहाम था। इस शहनशाही खुतबे में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ अहले मक्का ही से नहीं बल्कि तमाम लोगों से ख़िताबे आ़म फ़रमाया। खुतबे के बा'द शहनशाहे कौनैन صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम ने उस हज़ारों के मजमअ में एक गहरी निगाह डाली तो देखा कि सर झुकाए, निगाहें नीची किये हुवे, लर्जा व तरसां अश्राफ़े कुरैश खड़े हुवे हैं। उन ज़ालिमों और जफ़ाकारों में वोह लोग भी थे जिन्होंने आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम के रास्तों में कांटे बिछाए थे। वोह लोग भी थे जो बारहा आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम पर पथ्थरों की बारिश कर चुके थे। वोह खू ख़्वार भी थे जिन्होंने बार बार आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम पर कातिलाना हम्ले किये थे। वोह बे रहम व बे दर्द भी थे, जिन्होंने आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम के दन्दाने मुबारक को शहीद और आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम के चेहरए अन्वर को लहू लुहान कर डाला था। वोह औबाश भी थे जो बरसहा बरस तक अपनी बोहतान तराशियों और शर्मनाक गालियों से आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम के क़ल्बे मुबारक को ज़ख़्मी कर चुके थे। वोह सफ़फ़ाक व दरिन्दा सिफ़्त भी थे जो आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम के गले में चादर का फन्दा डाल कर आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम का गला घोट चुके थे। वोह जुल्मो सितम के मुजस्समे और पाप के पुतले भी थे, जिन्होंने आप صَلَّय़ लल्लुह तलालुह अलैह वसल्लम की साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا को नेज़ा मार कर ऊंट से गिरा दिया था और उन का हम्ल साक़ित हो गया था। वोह आप के खून के प्यासे भी थे, जिन की तिश्नालबी और प्यास खूने नबुव्वत के सिवा किसी चीज़ से नहीं बुझ सकती थी। वोह जफ़ाकार व खू ख़्वार भी थे जिन के जारेहाना हम्लों और ज़ालिमाना यलगार से बार बार मदीनए मुनव्वरा رَاٰہَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِیْمًا के दरो दीवार दहल चुके

थे। हुज़ूर ﷺ के प्यारे चचा, हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के कातिल और इन की नाक, कान काटने वाले, इन की आंखें फोड़ने वाले, इन का जिगर चबाने वाले भी इस मजमअ में मौजूद थे, वोह सितमगार जिन्हों ने शम्ए नबुव्वत के जां निसार परवानों हज़रते बिलाल, हज़रते सुहैब, हज़रते अम्मार, हज़रते ख़ब्बाब, हज़रते खुबैब, हज़रते जैद बिन दसिन्ना **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** वगैरा को रस्सियों से बान्ध बान्ध कर कोड़े मार मार कर जलती हुई रैतों पर लिटाया था, किसी को आग के दहकते हुवे कोइलों पर सुलाया था, किसी को चटाइयों में लपेट लपेट कर नाकों में धूवें दिये थे, सेंकड़ों बार गला घोंटा था। येह तमाम जोरो जफ़ा और जुल्मो सितमगारी के पैकर, जिन के जिस्म के रोंगटे रोंगटे और बदन के बाल बाल जुल्मो उदवान और सरकशी व तुग़यान के वबाल से ख़ौफनाक जुर्मों और शर्मनाक मज़ालिम के पहाड़ बन चुके थे। आज येह सब के सब दस (10), बारह (12) हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार के लश्कर की हिरासत में मुजरिम बने हुवे खड़े कांप रहे थे और अपने दिलों में येह सोच रहे थे कि शायद आज हमारी लाशों को कुत्तों से नोचवा कर हमारी बोटियां चीलों और कव्वों को खिला दी जाएंगी और अन्सार व मुहाजिरीन की ग़ज़बनाक फ़ौजें हमारे बच्चे बच्चे को खाको खून में मिला कर हमारी नस्लों को नैस्तो नाबूद कर डालेंगी और हमारी बस्तियों को ताख़्तो ताराज (तबाहो बरबाद) कर के तह्स नह्स कर डालेंगी, उन मुजरिमों के सीनों में ख़ौफ़ व हिरास का तूफ़ान उठ रहा था। दहशत और डर से उन के बदनो की बोटी बोटी फड़क रही थी, दिल धडक रहे थे, कलेजे मुंह में आ गए थे और अ़ालमे यास में उन्हें ज़मीन से आस्मान तक धूवें ही धूवें के ख़ौफ़नाक बादल नज़र आ रहे थे। इसी मायूसी और नाउम्मीदी की ख़तरनाक फ़िज़ा में एक दम शहनशाहे रिसालत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की निगाहे रहमत उन पापियों की तरफ़ मुतवज्जेह हुई और उन मुजरिमों से आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

ने पूछा कि “बोलो ! तुम को कुछ मा’लूम है ? कि आज मैं तुम से क्या मुआमला करने वाला हूं।” इस दहशत अंगेज़ और ख़ौफ़नाक सुवाल से मुजरिमीन, हवास बाख़्ता हो कर कांप उठे, लेकिन ज़बीने रहमत के पैग़म्बराना तेवर को देख कर उम्मीद व बीम (या’नी ख़ौफ़ व उम्मीद) के महशर में लरज़ते हुवे सब यक ज़बान हो कर बोले कि **أَمْ كَرِهُمُ وَإِنِّ أَمْ كَرِهُمُ** आप करम वाले भाई और करम वाले बाप के बेटे हैं।

सब की ललचाई हुई नज़रें ज़माले नबुव्वत का मुंह तक रही थीं और सब के कान शहनशाहे नबुव्वत का फ़ैसला कुन जवाब सुनने के मुन्तज़िर थे कि इक दम दफ़अतन फ़तेहे मक्का **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपने करीमाना लहजे में इरशाद फ़रमाया : **لَا تَوَيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ فَأَذْهَبُوا أَتَمُّ الطَّلَاقُ** आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

बिल्कुल ग़ैर मुतवक्क़ेअ तौर पर एक दम अचानक येह फ़रमाने रिसालत सुन कर सब मुजरिमों की आंखें फ़र्ते नदामत से अशक़बार हो गईं और उन के दिलों की गहराइयों से ज़ज़्बात, शुक्रिया के आसार, आंसूओं की धार बन कर उन के रुख़सार पर मचलने लगे और कुफ़फ़ार की ज़बानों पर **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** के ना’रों से हरमे का’बा के दरो दीवार पर हर तरफ़ अन्वार की बारिश होने लगी। नागहां (अचानक) और दफ़अतन एक अजीब इन्क़िलाब बरपा हो गया कि समां ही बदल गया, फ़िज़ा ही पलट गई और एक दम ऐसा महसूस होने लगा कि

**जहां तारीक़ था, बे नूर था और सख़्त काला था  
कोई पर्दे से क्या निकला कि घर घर में उजाला था**

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
अपने गुरूसे को कन्ट्रोल कीजिये !**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि हमारे प्यारे प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** कैसे रहीमो करीम थे कि इतने बड़े बड़े मुजरिम जो किसी भी तरह रहम के काबिल न थे उन पर अपने करम की बारिश करते हुवे फ़रमाया कि

“आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो” हमें भी अपने प्यारे प्यारे आका ﷺ के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे अपने गुस्से को काबू में रखने और दूसरों पर शफ़क़त व इनायत करने की आदत डालनी होगी, इस का फ़ाइदा हमें न सिर्फ़ दुनिया में बल्कि आख़िरत में भी होगा। कि हृदीसे पाक में आता है कि जो दूसरों पर रहम करता है **ALLAH** तआला उस पर रहम करता है।

(المعجم الكبير للطبرانی، 2/312، حدیث: 2301)

अल ग़रज़ नबिय्ये रहमत ﷺ की हयाते तय्यिबा में ऐसे कई वाकिआत हैं, जिन से पता चलता है कि आप ﷺ बे मिसाल अख़्लाक़े हसना के मालिक हैं, इन अख़्लाक़ में से हिल्म व अफ़व या'नी अज़िय्यत बरदाश्त करने, मुजरिमों को कुदरत के बा वुजूद बिग़ैर इन्तिक़ाम के छोड़ देने और मुआफ़ कर देने वाली आदते मुबारका वोह अज़ीम शाहकार है जो सारी दुनिया में अदीमुल मिसाल है।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं कि **يَا'नी** وَمَا اتَّقَمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِنَفْسِهِ إِلَّا أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللَّهِ की अपनी ज़ात के लिये कभी भी रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी से इन्तिक़ाम नहीं लिया, हां अलबत्ता **ALLAH** **عَزَّوَجَلَّ** की हुराम की हुई चीज़ों का अगर कोई मुर्तकिब होता तो ज़रूर उस से मुआख़ज़ा (या'नी पूछ गछ) फ़रमाते। (بخاری، کتاب المناقب، باب صفّة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳۵۲۰، ج ۲، ص ۳۸۹)

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ**

**सादगी व बे तकल्लुफ़ी**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार **ﷺ** की रोज़े रोशन की तरह जगमगाती, नूर बिखेरती सीरते मुबारका की एक और बे मिसाल पाकीज़ा सिफ़त “सादगी व बे तकल्लुफ़ी” भी है चुनान्चे,



हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ गुलामों की दा'वत को भी क़बूल फ़रमा लिया करते थे। जब की रोटी और सादा खाने की दा'वत पेश की जाती तो आप ﷺ इसे क़बूल फ़रमा लेते। मफ़्लूक़ल हाल (ग़रीब) अफ़राद बीमार पड़ते तो उन की बीमार पुर्सी फ़रमाते, ग़रीब और नादार लोगों को सोहबत का शरफ़ बख़्शते और अपने अस्थाब رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के दरमियान घुल मिल कर निशस्त फ़रमाते थे। (شفاء شریف جلد ۱ ص ۷۷)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका तय्यिबा त़ाहिरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि हुज़ूर ताजदारे दो आलम ﷺ कभी कभी अपने पीछे सुवारी पर अपने किसी ख़ादिम को भी बिठा लिया करते थे। (زرقانی جلد ۴ ص ۲۶۲)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि सरवरे काइनात ﷺ अपने घरेलू काम खुद अपने दस्ते मुबारक से कर लिया करते और अपने ख़ादिमों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फ़रमा लिया करते थे नीज़ घर के कामों में आप ﷺ अपने ख़ादिमों की मदद भी फ़रमाया करते थे। (شفاء شریف جلد ۱ ص ۷۷)

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ वोह जात जिस के लिये सारी काइनात को बनाया गया, उस की ऐसी सादगी कि घर के काम काज खुद करें, ख़ादिमों और गुलामों के साथ खाना तनावुल कर लें, घर के कामों में ख़ादिमों की मदद करें, सुवारी पर अपने साथ ख़ादिम को बिठा लिया करें, ग़रीबों की दा'वत को क़बूल करें और बख़ुशी तशरीफ़ ले जाएं। येह सब ऐसे उमूर हैं कि इन के मुतअल्लिक़ सुन कर बे साख़्ता ज़बान पर येह शे'र आ जाता है

तेरी सादगी पे लाखों तेरी अ़ाजिज़ी पे लाखों  
हों सलामे अ़ाजिज़ाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 426)

ﷺ صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ !

## सादगी इख़्तियार कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा सोचिये कि हम जिस आका صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महबूबत का दम भरते हैं, क्या उस आका صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अमल भी करते हैं ? वोह सरदार दो जहां हो कर भी ऐसी सादगी अपनाएं कि घर के काम खुद कर लें जब कि हमारा हाल येह है कि अपने घर के काम करना अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं, खादिम के साथ खाना खाना तो दूर की बात, वोह बेचारा अगर बराबर में बैठ जाए तो उसे अपनी तौहीन समझते हैं और अगर थोड़ा सा माल कहीं से हाथ आ जाए या कोई सरकारी ओहदा वगैरा मिल जाए और बड़े लोगों में उठना बैठना हो जाए तो मा बदौलत के अन्दाज़ ही बदल जाते हैं, सोच ही तब्दील हो जाती है, ग़रीबों से तो मिलना जुलना ही बन्द कर दिया जाता है, वोह बेचारे अगर दा'वत में बुलाएं तो उस दा'वत में जाना अपनी तौहीन समझी जाती है। क्या येही हमारे प्यारे प्यारे आका صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तरीका था ? हमारा येह अन्दाज़ कहीं तकबुर तो नहीं ? क्या हम येह भूल गए हैं कि हमारा और उन ग़रीबों को पैदा करने वाला एक ही है ? क्या हमें मरना नहीं ? क्या रोज़े महशर इन्साफ़ के लिये रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा नहीं होना ? कहीं ऐसा न हो की ग़रीबों को हज़रत की नज़र से देखना हमें बरबाद कर दे, अभी भी वक़्त है कि हम **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त की बारगाह में सच्ची तौबा कर लें, अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहकामात के मुताबिक़ गुज़ारें और अपनी ज़िन्दगी को सुन्नतों के सांचे में ढाल लें। अच्छे अख़्लाक़ अपनाने और नेक बनने का ज़ब्बा हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं नीज़ मदनी काफ़िलों में सफ़र करते रहें।

मक्तबतुल मदीना की मतबूआ, इल्मे दीन से माला माल कुतुबो रसाइल के मुतालए का सिलसिला भी जारी रखिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के बयान का तहरीरी गुलदस्ता बनाम “ग़रीब फ़ाइदे में है” भी मन्ज़रे आम पर आ चुका है, ग़रीबों से महब्बत की फ़ज़ीलत और गुर्बत के फ़ज़ाइल जानने के लिये मक़्तबतुल मदीना से येह रिसाला त़लब कीजिये, आइये इस रिसाले की चन्द झलकियां सुनते हैं :

❁ शेरे खुदा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَىٰ وَجْهَهُ الْكَرِيمَ** की क़नाअत ❁ दिल नर्म करने का नुस्खा ❁ ग़ुरबत के फ़वाइद ❁ ग़ुरबा व फ़ुक़रा 500 साल पहले ज़न्नत में ❁ मिस्कीनों के लिये ज़न्नत ❁ अकसर ज़न्नती ग़रीब होंगे ❁ मुफ़िलसी दूर करने का वज़ीफ़ा ❁ रोज़ी में बरक़त का बेहतरीन नुस्खा, दुआए नबिय्ये रहमत और मसाकीन से महब्बत, इस के इलावा और बहुत कुछ....

**صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَى مُحَمَّدٍ**

**मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये !**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यकीनन राहे खुदा में सफ़र करने वाले आशिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना बहुत बड़ी सआदत है। इन मदनी क़ाफ़िलों की बरक़त से पन्ज वक्ता नमाज़ व नवाफ़िल की पाबन्दी के साथ साथ प्यारे आक़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** की सुन्नतें भी सीखने की सआदत हासिल होती है और यूं इल्मे दीन हासिल करने का मौक़अ मयस्सर आता है। इल्मे दीन हासिल करने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं। चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** अपनी मायानाज़ तफ़्सीर “तफ़्सीरे कबीर” में लिखते हैं : सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** एक सहाबी से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे कि आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** पर वही आई कि इस सहाबी की ज़िन्दगी की एक साअत बाक़ी रह गई है। वोह वक़््त अ़सर का था। रहमते आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** ने जब येह बात, उस सहाबी को बताई तो उन्होंने ने मुज़त़रिब हो कर इल्तिज़ा की : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّم** मुझे ऐसे अमल के बारे में

बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये सब से बेहतर हो ।” तो आप **اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : “इल्मे दीन सीखने में मशगूल हो जाओ ।” चुनान्चे, वोह सहाबी **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** इल्म सीखने में मशगूल हो गए और मग़रिब से पहले ही उन का इन्तिक़ाल हो गया । रावी फ़रमाते हैं कि अगर इल्म से अफ़ज़ल कोई शै होती तो रसूलो मक्बूल **اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** उसी का हुक्म इरशाद फ़रमाते । (तफ़सीर क़ैर, ज, १, ص २१०)

बहर हाल इल्मे दीन हासिल करना हो या अख़्लाक़े रज़ीला (बुरी आदतों) से जान छुड़ा कर हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत हासिल करनी हो तो दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये । **اَللّٰهُ** **اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن** **اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** हमें ता दमे हयात इस पाकीज़ा मदनी माहोल से वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।

**سَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد**

**बयान का खुलासा**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आज हम ने सरकार **اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** के अख़्लाक़े करीमाना के हवाले से कुछ वाक़िआत सुने और इन वाक़िआत से महकने वाले चन्द मदनी फूलों की खुशबू से अपने दिलो दिमाग़ को मुअत्तर व मुअम्बर किया । सब से पहले हम ने सरवरे दो आलम **اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का एक कैदी के साथ हुस्ने सुलूक का वाक़िआ सुना जो आप **اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم** के करीमाना अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर ईमान ले आए । इस के बा'द येह भी सुना कि हुस्ने अख़्लाक़, नफ़्स में मौजूद उस कैफ़ियत को कहते हैं जिस के बाइस आ'माल ब आसानी अदा हों, इन्हें अमली जामा पहनाने में किसी ग़ौरो फ़िक्र की हाज़त न हो और वोह आ'माल अक्ली और शरई तौर पर पसन्दीदा भी हों । येह भी मा'लूम हुवा कि सरकार **اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم** के तमाम अवसाफ़ और वोह भी कामिल तौर पर बयान करना, किसी के बस में नहीं, जिस को जितनी तौफ़ीक़ मिलती है वोह उतना सरकार **اَلलّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم** का ज़िक्रे ख़ैर कर के अपनी दुन्या और आख़िरत को बेहतर बनाता है । इस के इलावा

हम ने अख़्लाक के बारे में आयाते कुरआनी और अह्दादीसे मुबारका भी सुनीं। इस बयान से हमें येह भी सीखने को मिला कि जिस तरह सरकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ** ने हुस्ने अख़्लाक के साथ दीने इस्लाम को फैलाया, हम भी अपने प्यारे प्यारे आका **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ** के नक्शे क़दम पर चलने की कोशिश करते हुवे बुरे अख़्लाक से अपने आप को बचाएं और हुस्ने अख़्लाक अपनाते हुवे दा'वते इस्लामी के मदनी काफ़िलों में सफ़र करते रहें ताकि हम खुद भी इल्मे दीन सीखें और दूसरों को भी सिखाने का ज़ब्बा मिले। हुस्ने अख़्लाक से मुतअल्लिक़ मज़ीद मदनी फूल हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब “हुस्ने अख़्लाक” आज हदिय्यतन हासिल फ़रमा कर खुद भी मुतालआ कीजिये और दूसरों को भी तोहफ़तन पेश कीजिये।

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ**  
**मजलिसे शौ'बए ता'लीम का तझारुफ़**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** क़ौमों की तक्दीर नौजवान नस्ल की तर्बिय्यत पर मुन्हसिर हुवा करती है। तरक्की व तनज़ुल की सेंकड़ो दास्ताने इस बात की गवाह है कि ज़माने की बाग़डोर उसी क़ौम के हाथ रहीं जिस की जवान नस्लें आ'ला किरदार व अत्वार की हामिल थीं और जिन अक्वाम की नौजवान नस्लें लहवो लअूब, खेल कूद में मगन रहीं, वोह पस्तियों में गुम हो गईं। आज हमारी हालत भी कुछ ऐसी ही है, हमारी नौजवान नस्ल भी तनज़ुली का शिकार नज़र आती है, क्यूंकि हमारा ता'लीमी मे'यार, इदारों की हालत और निज़ामे ता'लीम व तर्बिय्यत इन्तिहाई काबिले रहूम है।

चुनान्चे, शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत **وَامَتْ بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ** ने सरमायए मिल्लत को तबाही से बचाने का बेड़ा उठाया, उम्मेते मुस्लिमा की इस्लाह के मुक़द्दस ज़ब्बे के तहत एक अज़ीम मदनी मक्सद भी अता फ़रमाया : वोह क्या है ? “मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है” **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه** ने हर वोह कोशिश की जिस से मिल्लत का येह डूबता हुवा सितारा दोबारा अपनी आबो ताब से पूरी दुन्या को चमकाने लगे । चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं : “तलबा मुल्क व मिल्लत का कीमती सरमाया होते हैं, मुस्तक़्बल में क़ौम की बागडोर येही संभालते हैं, अगर इन की शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ तर्बिय्यत कर दी जाए तो सारा मुआशरा ख़ौफ़े खुदा व इश्के मुस्तफ़ा का गहवारा बन जाए ।”

तमाम गवर्नमेन्ट व प्राइवेट स्कूलज़, कॉलेजिज़, यूनिवर्सिटीज़ और मुख़लिफ़ ता’लीमी इदारों से मुन्सलिक लोगों में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा’वते इस्लामी के पैग़ाम को अ़ाम करने के लिये मजलिस शो’बए ता’लीम का क़ियाम अ़मल में लाया गया, जिस का बुन्यादी मक्सद मज़कूरा इदारों से वाबस्ता लोगों को दा’वते इस्लामी से वाबस्ता करते हुवे सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेहन देना है । येह मजलिस कॉलेजिज़ और यूनिवर्सिटीज़ के असातिज़ा व तलबा से अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मरासिम क़ाइम कर के इन्हें ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की सुन्नतों से रूशनास करवाती है । नीज़ ता’लीमी इदारों में मदनी इन्आमात का सिलसिला जारी करती और होस्टेल में मद्रसतुल मदीना बालिग़ान क़ाइम कर के इन मुस्तक़्बल के मे’मारों की दीनी व अख़्लाकी तर्बिय्यत की हर मुमकिन कोशिश करती है । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** अब तक बे शुमार बे अ़मल तलबा, गुनाहों से ताइब हो कर नमाज़ी और सुन्नतों के आदी बन चुके हैं ।

**اَللّٰهُمَّ** करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा’वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

**صَلُّوْا عَلَى الْكَحِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّد**

**बाश्ह मदनी काम कीजिये**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप भी दा’वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर नेकियां करने, गुनाहों से बचने और

नेकी की दा'वत को आम करने के लिये जैली हल्के के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। जैली हल्के के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम बा'दे फ़ज़्र मदनी हल्का भी है। जिस में रोज़ाना तीन आयाते कुरआनी की तिलावत मअ़ तर्जमए कन्जुल ईमान और तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान या तफ़्सीरे सिरातुल ज़िनान, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत, मन्ज़ूम शज़रए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या पढ़ा जाता है, इस के बा'द इशराक़ व चाशत के नवाफ़िल अदा किये जाते हैं। नमाज़े फ़ज़्र के बा'द तुलूए शम्स तक ज़िक़्रो अज़कार करने का सुबूत और फ़ज़ाइल, अह़ादीसे मुबारका में मौजूद हैं। चुनान्वे,

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीका **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं : मैं ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को फ़रमाते हुवे सुना कि “जो नमाज़े फ़ज़्र अदा करने के बा'द अपनी जगह बैठा रहे और कोई दुन्यवी बात न करे और **اَبْرَاهِيْمَ عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक़र करता रहे, फिर चाशत की चार रक्अतें अदा करे, तो गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाएगा, जैसा पाक उस दिन था, जिस दिन उस की मां ने उसे जना (पैदा किया) था कि उस पर कोई गुनाह न था।” (مسند ابی یعلیٰ، مسند عائشه، رقم ۴۸۳۴، ج ۴، ص ۹)

**اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मदनी कामों की बरकत से दा'वते इस्लामी को वोह तरक्की मिली कि दिन ब दिन हज़ारों लोग दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने लगे और उन की ज़िन्दगियों में क़ाबिले क़द्र मदनी इन्क़िलाब रू नुमा हो गया। आइये तरगीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं।

### मदीने का मुसाफ़िर

बाबुल मदीना (कराची) के अलाके नया आबाद के एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरे वालिदे बुजुर्गवार, जिन की उम्र कमो बेश 70 साल थी। इब्तिदाई दौर दुन्या की रंगीनियों की नज़्र रहा, मगर फिर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते



इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। **1995** ई. में जब दूसरी बार हज़ का मुज़दए जां फ़िज़ा मिला तो उन की खुशी क़ाबिले दीद थी। जैसे जैसे रवानगी का वक़्त करीब आ रहा था, खुशी दो चन्द होती जा रही थी। आख़िर उन की खुशियों की मे'राज का वक़्त करीब आ गया। रात **4:00** बजे ऐरपोर्ट की तरफ़ रवानगी थी। पूरी रात खुशी खुशी तय्यारी में मशगूल रहे, मेहमानों से घर भरा हुवा था, तक़रीबन **3:00** बजे एहराम बराबर में रख कर अपने कमरे में लैट गए। मैं भी लैट गया, अभी ब मुश्किल पन्दरह मिनट हुवे होंगे कि मेरे कमरे के दरवाज़े पर दस्तक पड़ी। चोंक कर दरवाज़ा खोला तो सामने वालिदा परेशानी के आलम में खड़ी फ़रमा रही थीं, तुम्हारे वालिद साहिब की तबीअत ख़राब हो गई है। मैं फ़ौरन उन के कमरे में पहुंचा तो वालिद साहिब बे क़रारी के साथ सीना सहला रहे थे, फ़ौरन अस्पताल ले जाया गया, डॉक्टर ने बताया कि हार्ट अटेक हुवा है। घर में कोहराम मच गया कि कुछ ही देर बा'द सफ़रे मदीना के लिये रवानगी है और वालिद साहिब को येह क्या हो गया ! अफ़सोस तय्यारा वालिद साहिब को लिये बिगैर ही सूए मदीना परवाज़ कर गया। वालिदे मोहतरम **5** दिन अस्पताल में रहे। इस दौरान मज़ीद **4** मरतबा दिल का दौरा पड़ा। मगर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी की बरकत से होश के आलम में उन की एक भी नमाज़ क़ज़ा न हुई। जब भी नमाज़ का वक़्त आता तो कान में अर्ज़ कर दी जाती, नमाज़ पढ़ लें ! आप फ़ौरन आंख खोल देते। तयम्मुम (تيمم) करा दिया जाता और आप नक़ाहत (कमज़ोरी) के बाइस इशारे से नमाज़ पढ़ लेते। आख़िरी "अटेक" पर फिर बे होश हो गए। इशा की अज़ान पर आंखें झपकीं तो मैं ने फ़ौरन अर्ज़ किया, अब्बाजान नमाज़ के लिये तयम्मुम करवा दूं, इशारे से फ़रमाया, हां, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने तयम्मुम करवाया और वालिद साहिब ने **अब्लाहु अक़बर** कह कर हाथ बांध लिये मगर फिर बे होश हो गए। हम घबरा कर दौड़े और डॉक्टर को बुला लाए।

फ़ौरन I.C.U में ले जाया गया, चन्द मिनट बा'द डॉक्टर ने आ कर बताया कि “आप के वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया है मगर वोह बड़े खुश नसीब थे कि उन्होंने ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ (اَللّٰهُ اَكْبَرُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) पढ़ने के बा'द दम तोड़ा !!!”

एक सय्यिद ज़ादे ने वालिदे मर्हूम को गुस्ल दिया। चूँकि वालिद साहिब को उंगलियों पर गिन कर अज़कार पढ़ने की आदत थी, लिहाज़ा आप की उंगली उसी अन्दाज़ में थी गोया कुछ पढ़ रहे हैं, बार बार उंगलियां सीधी की जातीं। मगर दोबारा उसी अन्दाज़ पर हो जातीं, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** कसीर इस्लामी भाई जनाजे में शरीक हुवे। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मेरे भाई की भी वालिद साहिब के साथ हज़ पर जाने की तरकीब थी। वोह हज़ की सआदत से बहरा मन्द हुवे। बड़े भाई का कहना है कि मैं ने मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيْمًا में रो रो कर बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अर्ज़ की, कि मेरे मर्हूम वालिद का हाल मुझ पर मुन्कशिफ़ हो, जब रात को सोया तो ख़्वाब में देखा कि वालिदे बुजुर्गवार एहराम पहने तशरीफ़ लाए और फ़रमा रहे हैं : “मैं उमरह की निय्यत करने (मदीने शरीफ़) आया हूँ, तुम ने याद किया तो चला आया, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं बहुत खुश हूँ।” दूसरे साल मेरे भतीजे ने मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर का'बतुल्लाह शरीफ़ के सामने अपने दादाजान या'नी मेरे वालिदे मर्हूम को ऐन बेदारी के आलम में अपने बराबर में नमाज़ पढ़ते देखा। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर बहुत तलाश किया मगर न पा सके।

**मदीने का मुसाफ़िर सिंध से पहुंचा मदीने में**

**क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में**

**صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد**

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान को इख़िताम की तरफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे

جَنَنَتِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم کا فرمانے جَنَنَتِ نِشَان ہِے : جِیس نے مِیری سُنَنَت سے مَہَبَّبَت کی اُس نے مُذَلَّ سے مَہَبَّبَت کی اُور جِیس نے مُذَلَّ سے مَہَبَّبَت کی وہ جَنَنَت مِیں مِیرے سَاِث ہوگا ۔

(مَشْكَاةُ الْمُصَابِيحِ، ج ۱ ص ۵۵ حدیث ۷۵ ادار الکتب العلمیہ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका  
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये !** शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के रिसाले **“163 मदनी फूल”** से इमामा शरीफ़ के मदनी फूल सुनते हैं ।

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा ﷺ इमामे के साथ दो रकअत नमाज़ बिगैर इमामे के 70 रकअतों से अफ़ज़ल हैं ।

और **عَزَّوَجَلَّ** बेशक ﴿الْقُرْآنُ دُرُّ سَمَّاءٍ وَمِنْهَا كَوْكَبٌ زُرَّاجٌ﴾ (3233) 265 حديث (3233) उस के फ़िरिश्ते दुरुद भेजते हैं जुम्हू के रोज़ इमामे वालों पर ।


**दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे**  
 (الفُرُوسُ مَمْنُورُ الخُطَابِ ج 1 ص 147 حدیث 529)  
**मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब**

“बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़्हा 660 पर है : इमामा खड़े हो कर बान्धे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उल्टा किया

(या'नी इमामा बैठ कर बान्धा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं। ❀ बान्धने से पहले

रुक जाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये वरना एक भी अच्छी निय्यत न हुई तो सवाब नहीं मिलेगा लिहाजा कम अज़ कम

येही निय्यत कर लीजिये कि रिज़ाए इलाही के लिये बतौरै सुन्नत इमामा बान्ध रहा हूं। ❀ मुनासिब येह है कि इमामे का पहला पेच

सर की सीधी जानिब जाए । (फ़तावा रज़विय्या जि. 22 स. 199)

✻ ख़ातमुल मुर्सलीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

के मुबारक इमामे का शिम्ला उमूमन पुस्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के

दरमियान दो शिम्ले होते, उलटी जानिब शिम्ला लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। (اشعة اللمعات ج3 ص582) ❀ इमामे के शिम्ले की मिक्दार कम अज़ कम चार उंगल और ❀ ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक़ीबन) एक हाथ। (फ़तावा रज़विय्या जि. 22 स. 182) (बीच की उंगली के सिरे से ले कर कोहनी तक का नाप एक हाथ कहलाता है) ❀ इमामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बान्धिये। (كشف الإتياس في استحياب اللباس ص38) ❀ इमामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छे गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश गुम्बद नुमा हो। (फ़तावा रज़विय्या जि. 22 स. 186) ❀ इमामे को जब अज़ सरे नौ बान्धना हो तो जिस तरह लपेटा है उसी तरह खोले और यक बारगी ज़मीन पर न फेंकदे। (عالمگیری ج5 ص330) ❀ अगर ज़रूरतन उतारा और दोबारा बान्धने की निय्यत हुई तो एक एक पेच खोलने पर एक एक गुनाह मिटाया जाएगा। (मुलख़़स अज़ फ़तावा रज़विय्या. जि. 6 स. 214) ❀ मुहक्क़ अलल इतलाक़, ख़ातिमुल मुहद्दिसीन, हज़रते अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَرِي** फ़रमाते हैं :  
يا'नी नबिय्ये अकरम **وَسَيِّدُ الْمُرَارِكِ** آنحضرت صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ذَرَّ الْفَرْسَ فِدْوً وَكَأَنَّ سِيَاهَ أَحْيَانًا سَبَّزَ  
كَ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَرِي** का इमामा शरीफ़ अकसर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी सब्ज़ होता था। (كشف الإتياس في استحياب اللباس للشّيخ عبد الحقّ الذّهلي ص38)

**اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** सब्ज़ रंग का इमामा शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रहमतुल्लिल अलमीन **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** ने सरे अन्वर पर सजाया है, दा'वते इस्लामी ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे को अपना शिआर बनाया है, सब्ज़ सब्ज़ इमामे की भी क्या बात है ! मेरे मक्की मदनी आका, मीठे मीठे मुस्तफ़ा **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** के रौज़ए अन्वर पर बना हुवा जगमग जगमग करता गुम्बद शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ है ! अशिक़ाने रसूल को चाहिये कि सब्ज़ सब्ज़ रंग के इमामे से हर वक़्त अपने सर को “सर सब्ज़” रखें और सब्ज़ रंग भी “गहरा” होने के बजाए ऐसा प्यारा प्यारा और निखरा निखरा सब्ज़ हो कि दूर दूर से बल्कि रात के अन्धेरे में भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के सब्ज़ सब्ज़ जलवों के तुफ़ैल जगमगाता नूर बरसाता नज़र आए।

नहीं है चांद सूरज की मदीने को कोई हाजत  
वहां दिन रात उन का सब्ज़ गुम्बद जगमगाता है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल  
मदीना की मतबूआ दो कुतुब बहारे शरीअत हिस्सा 16 (312  
सफ़हात) नीज़ 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब”  
हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का  
एक बेहतरीन ज़रीआ दा’वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में अशिकाने  
रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

तीन दिन हर माह जो अपनाए मदनी क़ाफ़िला  
बे हिसाब उस का खुदाया खुल्द में हो दाख़िला

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा’वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे  
इजतिमाअ में पढ़े जाने वाले

6 दुस्बदे पाक

(1) शबे जुमुआ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ النَّبِیِّ الْاَمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی

الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुजुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख्स हर शबे जुमुआ (जुमुआ और  
जुमा’रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़  
कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ  
की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह  
देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ उसे क़ब्र में अपने रहमत  
भरे हाथों से उतार रहे हैं।

(اَفْضَلُ الصَّلٰوٰتِ عَلٰی سَيِّدِ السَّادٰتِ ص ۱۵۱ ملحظاً)

(2) **तमाम गुनाह मुआफ़ :** اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ  
हज़रते सय्यिदुना अनस **رَفِىَّ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से रिवायत है कि  
ताजदारे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : जो शख्स येह दुरूदे  
पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने  
से पहले उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे । (अब्नू स ६०)

**(3) रहमत के सत्तर दरवाजे :** صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ  
जो यह दुरुूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रहमत के **70** दरवाजे  
खोल दिये जाते हैं । (الْقَوْلُ الْبَيْعُص २७७)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां : جَزَى اللَّهُ عَمَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ أَهْلُهُ :  
हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है  
कि सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : इस दुरुदे पाक  
को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिशते एक हज़ार दिन तक नेकियां  
लिखते हैं । (مَجْمَعُ الزَّوَادِج ۱۰ ص ۲۵۴ حدیث ۱۷۳۰)

**(5) छे लाख दुरूद शरीफ का सवाब :**  
 اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِي عِلْمِ اللَّهِ صَلَاةً دَائِمَةً بِدَاوَامِ مُلْكِ اللَّهِ  
 هَاجِرَتِ أَهْمَدُ سَاوِي **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** बा'ज बुजुर्गी से नक़ल  
 करते हैं : इस दुरूद शरीफ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ  
 पढ़ने का सवाब हासिल होता है । (أَفْضَلُ الصَّلَاةِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ ص १४९)

(6) कुर्बे मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى لَهُ  
 एक दिन एक शख्स आया तो हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ  
 ने उसे अपने और सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरमियान बिठा  
 लिया । इस से सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को तअज्जुब हुवा कि  
 येह कौन जी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार  
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता  
 है तो यूं पढ़ता है ।  
 (أَقُولُ الْبَيْتِ ص १२०)

# MAJLISE TARAJIM (DAWATE ISLAMI)

E-mail : [translation.baroda@dawateislami.net](mailto:translation.baroda@dawateislami.net) (+91 9327776311)